SHIVAJI COLLEGE
HINGOLI

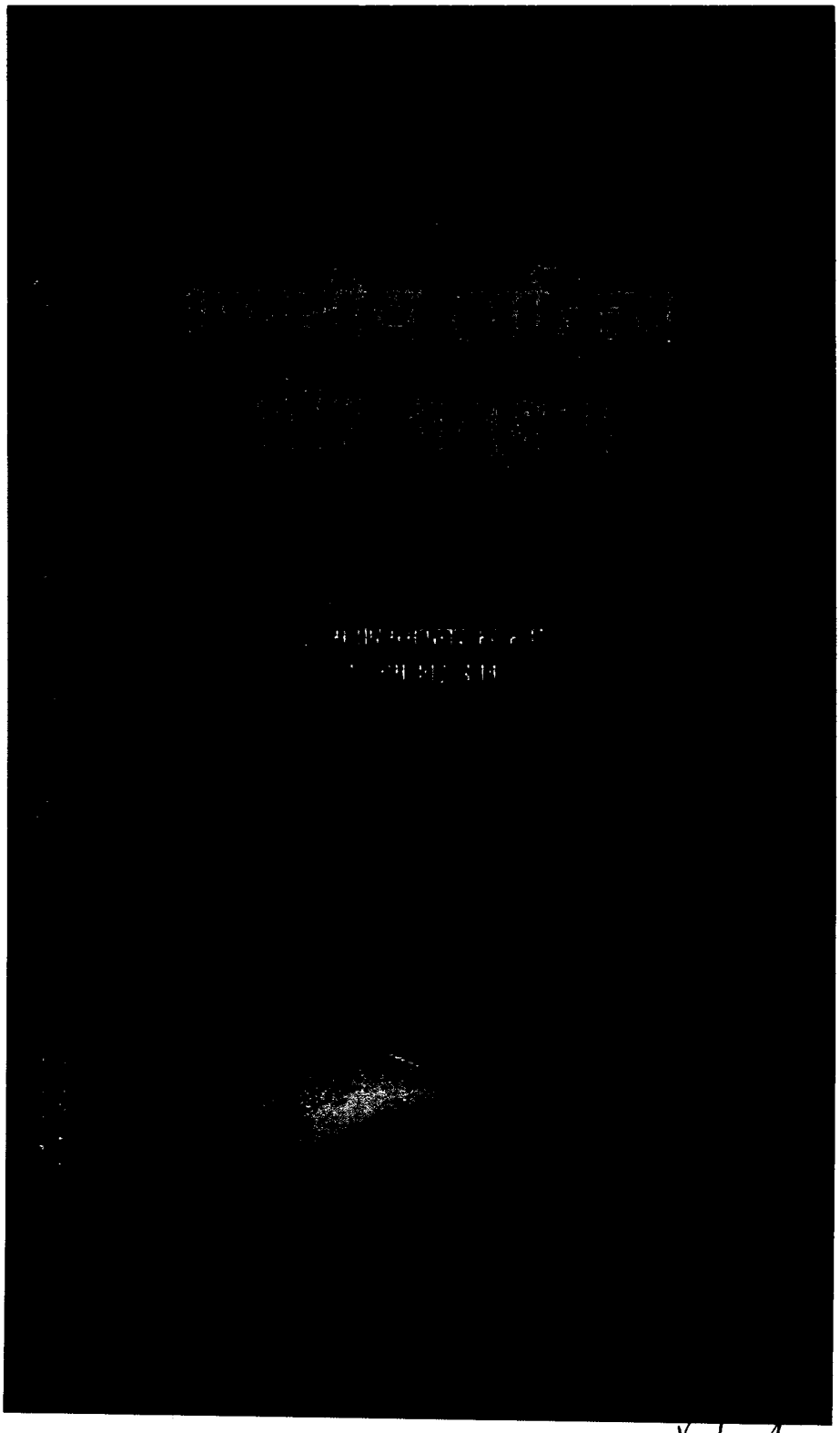

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE
HINGOLI

भारतीय साहित्य और अनुवाद

संपादक
डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी
डॉ. राम दगडू खलंग्रे

आई पब्लिकेशन्स,
लातूर (महाराष्ट्र)

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE
HINGOLI

Bhartiya Sahitya Aur Anuwad

पुस्तक	:	भारतीय साहित्य और अनुवाद
ISBN	:	978-81-952511-4-8
संपादक	:	डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी डॉ. राम दगडू खालंग्रे
प्रकाशक	:	आई पब्लिकेशन्स, लातूर (महाराष्ट्र) माताजी नगर, रिंग रोड, लातूर। संपर्क : 9421362107, 9767755911 aaipublicationslatur@gmail.com
संस्करण	:	प्रथम, 5 सितंबर, 2021
शब्द संयोजन	:	संस्कृति कुलकर्णी
मुखपृष्ठ	:	श्री एस. कुलकर्णी
मूल्य	:	300/- (तीन सौ रूपये मात्र)
मुद्रण	:	आई पब्लिकेशन्स, लातूर
©	:	संपादकाधीन

* "भारतीय साहित्य और अनुवाद" इस पुस्तक में व्यक्त मतों से संपादक का सहमत होना जरूरी नहीं है।

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE
HINGOLI

अनुक्रमणिका

1.	**अनुवाद प्रकिया : एक अनुवादक की दृष्टि से** डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे	11
2.	**संस्कृति और अनुवाद : पारस्परिक अंतः संबंध** प्रो. (डॉ.) सतीश यादव	15
3.	**अनुवाद व्युत्पत्ति : स्वरूप एवं वर्गीकरण की अवधारणा** डॉ. आरती पाठक	22
4.	**भारतीय साहित्य अवधारणा : स्वरूप और विषेशताएँ** राकेश कुमार	28
5.	**भारतीय साहित्य अवधारणा : स्वरूप और विशेषताएँ** स्मिता रजक	36
6.	**अनुवाद का स्वरूप : भाषा, प्रकार एवं प्रकृति का संदर्भ** डॉ. सिध्देश्वर वि. गायकवाड	42
7.	**अनुवाद : परिभाषा, स्वरूप और प्रकार** डॉ. विष्णु गोविंदरा राठोड	47
8.	**अनुवाद की परिभाषा और आयाम** डॉ. विजय वाघ	53
9.	**अनुवाद परीक्षण, मूल्यांकन तथा समीक्षा** डॉ. प्रवीण मन्मथ केंद्रे	58
10.	**अनुवाद स्वरूप और प्रवृत्ति** डॉ. विष्णु नामदेव लांडे	60
11.	**अनुवाद स्वरूप एवं प्रवृत्ति** मनजीत	63
12.	**अनुवाद : प्रकिया और प्रविधि** श्री उमाजी सुभाष पाटिल	67
13.	**अनुवाद और संस्कृति** अशोक सूर्यवंशी	77

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

14.	**भाषा, साहित्य और अनुवाद** डॉ. रश्मि पाण्डेय	80
15.	**अनुवाद की उपयोगिता** डॉ. पंडित बन्ने	85
16.	**अनुवाद का स्वरूप एवं उपादेयता** प्रा. रूपचंद मारूती खराडे	89
17.	**अनुवाद के विधाओं का संदर्भ** अर्चना महादेवराय निघोंट	93
18.	**आधुनिक भारतीय भाषाओं में अनुवाद की समस्या** डॉ. राखी उपाध्याय	102
19.	**अनुवाद का महत्व** डॉ. विरनाथ पांडुरंग हुमनाबादे	109
20.	**अनुवाद साहित्य की आवश्यकता** डॉ. गणपत श्रीपतराव माने	112
21.	**अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार और महत्व** डॉ. राम दगडू खलंग्रे	117
22.	**मशीनी अनुवाद तथा हिंदी** डॉ. हणमंत पवार	123
23.	**अनुवाद और संचार माध्यम** प्रा. एच. टी. पोटकुले	129
24.	**हिंदी अनुवाद में रोजगार के विविध आयाम** डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ	132
25.	**वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की प्रासंगिकता** डॉ. निशा वालिया	137
26.	**हिंदी भाषा विभिन्न रोजगारों की उपलब्धि** डॉ. मालती शिंदे (चव्हाण)	143
27.	**अनुवाद में रोजगार की संभावनाएँ** डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी	146
28.	**अनुवाद में रोजगार की संभावनाएँ** सौ. योगिता अविनाश चौकटे	153

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

24
हिंदी अनुवाद में रोजगार के विविध आयाम

डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
सहयोगी प्राध्यापक हिन्दी विभागाध्यक्ष,
शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली.
(महाराष्ट्र)

अनुवाद एक व्यापक प्रक्रिया है। उसका सम्बन्ध भाषा से है। भाषा का सम्बन्ध संस्कृति से है। संस्कृति भाषा को जन्म देती है और भाषा संस्कृति को रचती है। भाषा संस्कृति का वहन और संवर्धन करती है। संस्कृति की अभिव्यक्ति अनेक रूपों में होती है, उनमें भाषा प्रधान है। भावों, विचारों और कल्पनाओं का आदान–प्रदान संस्कृति के लिए आवश्यक होता है, जो भाषा में ही होता है। एक ही भाषिक संस्कृति में जब यह मानवीय व्यवहार सुरू होता है तब व्यापक अर्थ में अनुवाद की प्रक्रिया ही शुरू होती है। व्यक्ति अपने भावों–विचारों को भाषा में अनुदित ही करता है। जब दुसरे व्यक्ति उसे सुनते हैं तब वे भी अपने भाषा में उसे समझने का प्रयास करते हैं तो वह भी अनुवाद की प्रक्रिया है। एक भाषा के अंतर्गत इस प्रकार आदानप्रदान होना एक तरह से अनुवाद ही है। इस संबंध में डॉ. भोलानाथ तीवारी का कथन है कि "एक भाषा में व्यक्त विचारों की व्यक्त भावों एवं विचारों को लक्ष भाषा में तथा संभव अपने मूल रूपमें लाने का प्रयास करता है।"[1] अपनी भाषा की साहित्यरचना पढते समय हरएक पाठक अपनी समझ, रूचि, ज्ञान आदि के आधारपर उसका अपने लिए अनुवाद ही करता है। यह उस रचना की पुर्नरचना ही होती है। किन्तु अनुवाद विद्या में हम इस व्यापक प्रक्रिया को सीमित अर्थ में ग्रहण करते हैं। अतः अनुवाद की अवधारणा में अनुवाद के लिए दो भिन्न भाषाओं की आवश्यकता होती है। इनमें से एक मूल का स्रोत भाषा होती है तो दुसरी लक्ष्य भाषा होती है। स्रोत भाषा की सामग्री को लक्ष्य भाषा में स्थानांतरित किया जाता है। स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में जो सामग्री ले जायी जाती है वह प्रायः लक्ष्य भाषा में नहीं होती। इसीलिए तो अनुवाद आवश्यक हो जाता है। बृहत पर्यायवाची कोश के अंतर्गत अनुवाद शब्द के पर्यायी शब्द इस प्रकार दिये गए हैं। अनुवाद का अर्थ उल्था, तर्जुमा और भाषांतर है।"[2]

आज के इस वैज्ञानिक आधुनिक युग में अनुवाद का महत्व और भी बढ़ गया हैं। क्योंकि, आधुनिक युग में जहाँ विज्ञान के नए नए अविष्कार , ज्ञान विज्ञान के

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE
HINGOLI

नए–नए क्षेत्र खुल रहे हैं। कम्प्युटर , इंटरनेट, आदि टेक्नॉलोजी की होडसी लग रही हैं। वहाँ अनुवाद का महत्व तथा आवश्यकता भी बढ रहीं है। अनुवाद रुपान्तर का एक माध्यम ही नहीं वह एक कला हैं। जो देश–विदेश के बीच दूरियाँ उत्पन्न करने वाले साधनों को आपस में जोडकर प्रगति की नई–नई दिशाओं की ओर ले जाने का महत्वपूर्ण कार्य करता हैं। अनुवाद को एक संश्लिष्ट प्रक्रिया भी कहा जाता है। क्योंकि, जो पाठ–सापेक्ष होने के साथ–साथ अनुवादक के व्यक्तित्व की छाप को भी अंकित करता हैं। अनुवाद रोजगार उपलब्धि में सहायक होता हैं। आधुनिक युग में जीवन के अनेक क्षेत्रों की समृध्दि के साथ भाषा तथा संस्कृति के संस्कारवृध्दि के लिए अनुवाद एक अनिवार्य तत्व के रुप में सामने आया हैं। लेकिन अनुवाद कोई सहज और सरल कार्य नहीं यह पूर्णत प्रामाणिक सत्य हैं। वास्तव में अनुवाद अनुवादक के गांभीर्य, धैर्य, परिश्रम , विवेक तथा नव नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा की कसोटी हैं। हमारे समाज को यदी अनुवाद का युग कहा जाए तो यह कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। सोच और व्यवहार के हर स्तर पर हम अनुवाद पर आश्रित हैं, अनुवाद के अग्रही हैं। शायद ही जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र हो, जिसमें अनुवाद का उपयोग न हो, अपरिहार्य तौर पर अनुवाद एक व्यापक और प्रासंगिक स्थिति हैं। इसीलिए यह सर्वथा स्वभाविक ही हैं कि नए संसाधनों के विकास और व्यापक स्थर पर मान्वीय संपर्क के संदर्भ में अनुवाद के महत्व प्रासंगिक और भविष्य का अनुशीलन किया जाए। संसार के सभी भाषाओं और बोलिओं के बीच वैचारिक सर्जनात्मक और कार्यात्मक तालमेल स्थापित रखने के लिए अनुवाद ही सर्वाधिक लोकप्रिय एवं उपयोगी माध्यम बन गया हैं। राष्ट्रीय एकता से लेकर अंतर्राष्ट्रीय समीपता तक अनेक सामाजिक सूत्रों का नियमन अनुवाद से संभव होता हैं। ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में संसार की प्रगति और उपलब्धियों की अद्यतन जानकारी के लिए भी मनुष्य अनुवाद पर निर्भर हैं।

अनुवाद को संस्कृति और ज्ञान का पुल कहा जाता है परन्तु विकसित और विकासशील दोनों ही देशों में स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। विश्व के सामने अपनी पहचान सुरक्षित रखने और अनवरत विकासमान सभ्यता की दौर में पीछड़ने से बचने के लिए अनुवाद का उपयोग मनुष्य और समाज के लिए अन्विार्य आवश्यकता है। हिन्दी भाषा और अनुवाद उससे निर्मित रोजगार यह आज की जरुरत और विकासात्मक उपकरण भी हैं इसमें संदेह नहीं। आज का युग संचार माध्यमों के क्रांति का युग हैं। हमारे देश में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों संस्थाओं और व्यावसायिक उद्देश्यों की पूर्ति का लक्ष्य लेकर आने वाले व्यापारियों ने यदि हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी का दोहन अपनी निर्मिति के लिए प्रारम्भ किया है तो हमें यह भ्रम कदापि नहीं पालना चाहिए कि वे हमारी भाषा का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं। वे जानते है कि, यहाँ के जन–जन की भाषा हिन्दी को एक हथियार या उपकरण के रुप में इस्तेमाल किया जाए। आज के वैज्ञानिक प्रोद्योगिक विकास के युग में मानव का कार्य क्षेत्र विश्वस्तरीय बन गया हैं।

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

उसे केवल भाषा ही नहीं सीमा रेखा से परे जाकर अपने कार्य करने होते हैं। कोई भी देश कितना ही विकसित क्यों न हो उसे आज अन्य देशों से सम्पर्क करना ही पड़ता हैं। इसीलिए एक सम्पर्क भाषा की आवश्यकता होती हैं। और इसीलिए अनुवाद एक सशक्त विधा के रुप में कार्यरत हैं। दूसरे शब्दो में कहा जा सकता है कि विविधता में एकता स्थापित करने का माध्यम अनुवाद ही हैं। किसी भाषा में अभिव्यक्त, भावों तथा विचारों को किसी अन्य भाषा में रुपांतरित करना अनुवाद का कार्य हैं। आज विश्व स्तर पर अनेक बोली भाषाओं को जानने या आत्मसात करने के लिए अनुवाद ही महत्वपूर्ण मार्ग हैं। अनुवाद एक सेतु का कार्य करता हैं।

अनुवाद के महत्व को पहचानते हुए निजी और सरकारी दोनों तरह के संस्थानों में अनुवादकों की जरूरत बढ रही है। भारत सरकार ने अनुवाद ब्यूरों बनाने की योजना बनाई है। सरकारी कार्यालयो में अनुवाद माँग को देखते हुए परीक्षा आयोजित करते है। उसमें ज्युनिअर और वरिष्ठ दोनों तरह के अनुवादक चयनित होते है। चयन्ति किए जाने वाले अनुवादक को दूभाषिया विदेशी फिल्मों को हिंदी में डबिंग हो या संसद में अंग्रेजी भाषा से हिंदी में रूपांतरण इन सभी कामों के लिए होती है। दुभाषिए को रोजगार के अवसर मिल रहे है। व्यवसायिक क्षेत्रों में भी अनुवादक की कमी नही है।

विधी प्रारुप का यह आदर्श होता है कि विधी की भाषा अधिक से अधिक सरल हो। किन्तु इसे व्यवहार मे लाना बडा मुश्किल है। "हालांकि साहित्य के अलावा ज्ञान विज्ञान के अनेक क्षेत्रों में भी हिंदी का इतिहास कमजोर नहीं रहा है, अपितु ज्ञान–विज्ञान का हस्तांतरण मजबुत की विशेषता रही है। आज की तारीख में चिकित्सा, अभियंत्रण , परिस्थितिक, अर्थशास्त्र से लेकर विभिन्न भाषाओं से साहित्य का हिंदी में अनुवाद करने वालों की भारी मांग है। "अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार की प्रक्रिया दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही है। अनुवाद महत्व को जानते हुऐ विधि, बँक में भी रोजगार उपलब्ध हो रहे हैं। निजी और सरकारी दोनों संस्थानों में रोजगार की माँग को देखते हुए रोजगार उपलब्ध हो रहे हैं।

अनुवाद को संस्कृति का पुल कहा जाता है। वर्तमान स्थिति में अनुवाद के सामने कई समस्याएँ खडी है। आज एक रोजगार के दृष्टि से अनुवाद का क्षेत्र उतना विकसित नहीं हुआ है। इसे आज की शिक्षा व्यवस्था को जिम्मेदार माना जाता है। क्योंकि परंपरागत शिक्षा पद्धति को छोडकर आज भाषा अध्ययन ने संप्रेषण का रूप अपनाया है। जिस कारण छात्रों में कलात्मक अंगों का परिचय नहीं हो पा रहा है। इसके अलावा आज के छात्र वर्ग में व्याकरण तथा साहित्य रुचि ज्यादातर दिखाई नहीं देती है। इस कार्य के लिए अनुवाद और अनुवाद प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण योगदान है।

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद व दुभाषिए के रूप में भी रोजगार की अपार संभावनाएँ हैं। शैक्षणिक संस्थानों में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुवादक एवं दुभाषिए के रूप में, शैक्षणिक संस्थाओं में अध्यापन के क्षेत्र में, राजभाषा अधिकारी

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

रूप में, बी. पी. ओ. एवं कॉलसेंटर में विदेशी भाषा इंटरप्रिटर के रूप में, पर्यटन उद्योग एवं होटल प्रबंधन के क्षेत्र में विभिन्न एयरलाइन्स, पुस्तक पब्लिकेशन, विदेशी कम्पनियाँ, पर्यावरण उद्योग, पुस्तक अनुवाद, कैटलॉग तकनीकी डेटा, राजनीतिक भाषण तैयार करने इत्यादि में अनुवाद प्रौद्योगिकी क्षेत्र में मशीनी अनुवाद और सिनेमेटिक अनुवाद का कार्य, फिल्म एवं टी.वी. में अनुवादक रूप में, पत्रकारिता में अनुवादक के रूप में रोजगार की असीम संभावनाएँ है। वैश्वीकरण के इस दौर में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद की महत्ता बढ़ती जा रही है। इसे बहुआयामी एवं स्वायत्त अनुशासन के रूप में पहचान मिल चुकी है।

हिंदी अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के अवसर

1. शैक्षणिक

शैक्षणिक संस्थानों में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुवादक एवं दुभाषिए के रूप में, शैक्षणिक संस्थाओं में अध्यापन के क्षेत्र में सर्वाधिक रुप से रोजगार उपलब्ध है। विज्ञान तथा औद्योगिकी का क्षेत्र इक्किसवीं सदी में तेज गति से विकास कर रहा है। इस क्षेत्र में कई भाषाएँ एक दूसरे से आगे बढने का प्रयास कर रही है। चिकित्सक विज्ञान एवं अंतरिक्ष–विज्ञान जैसे क्षेत्र में आज कई शोध कार्य अग्रेसर है।

2. पर्यटन

आज विश्व को देखने की ईच्छा हर एक व्यक्ति के मन में है। वह विश्व की धरोहर, प्रकृति वहा की संस्कृति को देखना चाहता है। प्रत्येक देश के प्रमुख नगरों में आंतरराष्ट्रीय पर्यटन करानेवाली एजेन्सियाँ होती है। जिनमें काम करने वाले कई पर्यटक मार्गदर्शक होते है। जिसके कारण पर्यटन के क्षेत्र में काफी बदलाव नजर आ रहा है। देश–विदेश में पर्यटन करने के लिए विविध भाषिक लोग जाते–आते है।

3. साहित्य

भारत देश बहुभाषी है। भारत की सभी भाषाओं का साहित्य उच्चकोटि का है और यह उच्चकोटि का साहित्य दूसरी भाषा में प्रस्तुत करने का माध्यम अनुवाद है । विदेशी भाषा का साहित्य प्रस्तुत करने का माध्यम अनुवाद है।

4. संसदीय एवं प्रशासन

संसदिय कामकाज तथा प्रशासन के क्षेत्र में कई विभाग कार्यरत होते है। इन सभी विभागों का देश के विभिन्न विभागों से तथा विदेशों के विभिन्न राजदुतों से सरकारों से संपर्क करने के लिए अनुवादक की आवश्यकता पडती है। इनके सभी दस्ताऐवज देशी और विदेशी भाषाओं में होते है । इन सबको अनुदित करना पडता है। इसके लिए अनुवादक की आवश्यकता होती है।

5. दुभाषिए

विश्वभर में कई भाषाएँ बोली जाती है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद और दुभाषिए के रूप में रोजगार की उपलब्धता है। विश्व को संगठन में कुछ

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

अवसरों पर दुनिया भर के प्रतिनिधि आते हैं। वे अपने विचार अपनी भाषा में प्रस्तुत करते है। तब दुभाषिए की आवश्यकता होती है।

6. धार्मिक

अनुवाद दो भिन्न संस्कृतियों को जोड़ने का माध्यम है। भारत देश में अनेक धर्म है। प्रत्येक धर्म की एक अपनी भाषा होती है। उस धर्म के लोग ही उस भाषा का ज्ञान रखते है। धर्म का ज्ञान, संदेश दूसरे धर्म के लोगों तक पहुँचाना है तो वह अनुवाद के द्वारा ही संभव है। अतः इस क्षेत्र में अनुवादक को रोजगार मिलते है।

7. विज्ञान

भारतीय भाषाओं में आधुनिक युग में किए जा रहे खोज के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है वह ज्यादातर अंग्रेजी भाषामें दिखाई देते है। इस संदर्भ में डॉ. हरीमोहनजी का कहना है कि "विज्ञान के क्षेत्र का साहित्य भारत को अधिकांशतः विदेशी भाषाओं में ही सुलभ हुआ है। इस उन्नति को भारत में भारत के लोगों या भारतीय मानस के लिए भारतीय भाषाओं में सुलभ करना अनुवाद के माध्यम से तो संभव हो सकता है और हो भी रहा है।"[3]

अनुवाद कार्य में निपुणता के लिए आवश्यक है कि हम लगातार प्रयासरत रहे। जिस भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना है दोनों भाषाओं का पूर्ण ज्ञान व अधिकार अनुवादक को होना चाहिए, दोनों भाषाओं के व्याकरण ज्ञान से भी अच्छी तरह परिचित होना चाहिए। एक भाषा को दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि शब्द अथवा वाक्य का कथ्य, भाव परिवर्तित नहीं होना चाहिए। एक भाषा से दूसरी भाषा में परिवर्तित करते समय यह भी ध्यान देना चाहिए कि अर्थ का अनर्थ न हो। अनुवाद कार्य जितना आसान दिखता है उतना आसान नहीं होता है। जहाँ अच्छे अनुवादक के लिए अनुवाद कार्य एक खेल के समान रोचक व सरल है, वहीं पाठक के लिए उसकी खूबसूरती कला का रूप धारण कर लेती है।

अनुवाद एक ऐसा साधन है जिससे वैश्विक साहित्य समृध्द होता जा रहा है। वर्तमान समय में हर क्षेत्र में अनुवाद का कार्य हो रहा है। आज के आधुनिक संचार माध्यम उपयोगी सिध्द हो रहे है। संचार माध्यमों के कारण विश्व एक गांव के रूप में उभरकर आया है। हिंदी अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के अवसर अधिक है।

संदर्भ संकेत :

1. डॉ. तिवारी भोलानाथ, अनुवाद कला, शब्दकार प्रिंटर्स, प्र. स. 1998 पृ. 111
2. संपा. डॉ. तिवारी भोलानाथ, बृहद पर्यायवाची कोश, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, सं 1962 पृ. 307
3. डॉ. हरीमोहन, राजभाषा हिंदी में वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की दिशाएँ, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली 1980 पृ. 53

■■■

PRINCIPAL
Shivaji College, Hingoli.
Tq. & Dist. Hingoli. (MS.)